

## विन्ध्य क्षेत्र के स्वाधीनता आन्दोलन एवं साहित्य

डॉ.अभिशिखा नामदेव

हिन्दी विभाग

शासकीय कन्या महाविद्यालय  
सीधी (म.प्र.)मो- 9098210777

साहित्य का मानव जीवन के साथ चिरंतन संबंध होता है सामाजिक प्राणी होने के कारण क्रिया कलाओं में ही नहीं, विचारों में भी वह सामाजिक बना रहता है। समाज के किसी वर्ग से साहित्यकार का घनिष्ठ संबंध रहता है। यह परिवेश रचनाकार की मनोवृत्ति और उसके द्वारा साहित्यिक चेतना को प्रभावित करती है। साहित्य अपने व्यक्त या मूर्त रूप में रचना अथवा कृति है किन्तु अव्यक्त रूप में कृति के पीछे कृतिकार का व्यक्तित्व और कृतिकार के व्यक्तित्व के पीछे उसका सामाजिक परिवेश होता है। अतः साहित्य के व्यक्तित्व के पीछे उसका सामाजिक परिवेश होता है। अतः साहित्य का एक छोर सामाजिक परिवेश के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है।

19वीं शताब्दी में भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण घटना सन 1857 की कृति है। समाज में चेतना जागृत करने वाला यह आन्दोलन मध्य युग की समाप्ति और आधुनिक युग के आरम्भ का सूचक माना जाता है। आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में यह क्रान्ति सीमा रेखा है। इस काल के साहित्य की प्रमुख विशेषता राष्ट्रीयता की भावना है, इसलिए कवियों को दरबार से बाहर जाना पड़ा। राजनैतिक क्षेत्र में जो आन्दोलन चल रहा था साहित्यकारों ने उसका समर्थन किया। जनता के साथ मिलकर विदेशी सत्ता का विरोध किया फलतः इस युग की कविता देश प्रेम से भरी हुई है। एक ओर सम्राज्यवाद और उसके कनिष्ठ सहयोगी भूमिपति और दूसरी ओर बहुसंख्यक भारतीय जनता, जिसके भारतीय पूजिपति वर्ग, मजदूर वर्ग और किसान सामिल थे उनके बीच उमड़ने वाले समझौता विहीन अन्तर्विरोधों ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की नींव डाली।

प्रत्येक रचना एक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया अपने समय की भावनाओं को साहित्यिक विधाओं में प्रकट करती है। आधुनिक काल आरम्भ होने के पहले रीतिकालीन काविताओं में नायिकाओं के नख शिख वर्णन तथा श्रृंगारिक रूपों के चित्रण की प्रधानता थी। स्वाधीनता आन्दोलन का सूत्रपात होने से रचना धर्मिता में पुराने विषय वस्तु के मोह को त्याग कर देश प्रेम अतीत गौरव, समाज सुधार वर्तमान की आलोचना जैसी नवीन विषयों पर लेखनी चलाई। काल अपने अवरोध] जड़ता और रूढ़िवादिता के कारण स्थिर और एक रस हो चुका था] एक ऐतिहासिक प्रक्रिया ने उसे पुनः गत्यात्मक बनाया।

भारत के आधुनिक इतिहास से यह स्पष्ट होता है कि, इसका उदभूत राष्ट्रवाद एवं स्वराज्य की अवधारणा को लेकर हुआ है। इस संदर्भ में सन 1857 की क्रान्ति नैतिक, सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक, आध्यत्मिक दिशा में नवीन विचारधार के उदघोष की क्रान्ति थी। यह सामान्य आन्दोलन नहीं था बल्कि एक ऐसी व्यापक क्रान्ति थी जिसने जनमानस को आन्दोलित कर दिया एवं प्रत्येक भारतीय को बलिदान के लिए प्रेरित किया। हिन्दवासियों यदि हम सब मन में ठान ले तो शत्रु को क्षण भर में धूल छटा सकते हैं और अपने प्राण प्रिय धर्म एवं देश को पूरी तरह भय मुक्त कर सकते हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सूत्रपात होते ही अन्य राज्यों की भांति राजनैतिक जागरण का सूत्रपात विन्ध्य प्रदेश के राज्यों में आरम्भ हुआ। विन्ध्य क्षेत्र बघेलखण्ड और रीवा रियासत एक दूसरे के समानार्थी ही है। शिव संहिता में इस भू-खण्ड को वरुणान्वल नौम से उल्लेखित किया गया है। इसे शेषावतार लक्ष्मण की राजधानी माना गया है। बघेलखण्ड के इतिहास के केन्द्र के बांधवगढ़ भी है।

प्राचीन ग्रन्थों में बल का नाम करुष मिलता है। कारण यह है कि विन्ध्य का लोक जीवन अभाव और संकटों से त्रस्त रहा है, अतः करुष क्षुधा नामकरण की सार्थकता सिद्ध होती है। डॉ भगवती प्रसाद शुक्ल का मानना है कि 'उत्तर में चातु सोहागी तथा डभौरा, पूर्व में देवसर, सिगरौली दक्षिण में लखौरा अमरकंटक, पश्चिम में मैहर, सतना कोठी तथा सोहावल तक का क्षेत्र में बघेली भाषा जाती है।'

प्राचीन काल में उत्तरी भारत में शौरसेनी तथा मगधी दो प्राकृत भाषाएं प्रचालित थीं। शौरसेनी और मागधी के बीच जो प्राकृत प्रचालित थी उसे अर्द्ध मागधी कहा जाता था। शौरसेनी का केन्द्र मथुरा तथा मागधी का केन्द्र पटना था, अर्द्धमगधी में दोनों के लक्षण विद्यमान थे जिससे पूर्वी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। पूर्वी हिन्दी से ही बघेली, छत्तीसगढ़ी और हिन्दी बोलियों का विकास हुआ। 'कथन है कि यद्यपि जनमत इसे अलग बोली मानता है। किन्तु भाषा वैज्ञानिक स्तर पर यह अवधी की ही एक उप बोली ज्ञात होती है और इसे दक्षिणी अवधी कह सकते हैं।'

सन 1857 की क्रान्ति समाज में राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने वाला आन्दोलन था। यह आन्दोलन आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक सीमा रेखा है इसके पूर्व के कविता में राजाओं के युद्ध प्रेम, श्रृंगार से संबंध रही, परन्तु स्वाधीनता आन्दोलन के बाद कविता में जनजीवन और राजनैतिक परिस्थितियों के साथ संबन्ध स्थापित हुआ राष्ट्रीय काव्यधारा में विन्याचल के कवियों में भी राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान थी जिसमें प्रमुख रूप से बुन्देलवाला गुजराती देवी, ठाकुर गोपालशरण सिंह, लाल महाबलि सिंह, वियोगी हरि, वियोगी हरि के काव्य का उदाहरण दृष्टव्य है-

**जाहि देखि फरहत गगन, गये काँप जग राज  
सो भारत की जय ध्वजा, परि धरातल आज।**

ठाकुर गोपालशरण सिंह का महाकाव्य जगदालोक राष्ट्र की आलाबापू को नायक बनाकर ही लिखा गया है। कवि की राष्ट्रीयता में स्वदेशी महिला और जागरण के भाव परिलक्षित होते हैं। उनकी रचनाएं मानवीयता पर आधारित विश्व शान्ति चाहती है, उसे वीर भूमि परत्रतंता, पीडादायक प्रतीत होती है।

**वीरो की यह जन्ममि है रामकृष्ण का लीला स्थल ।**

**भीष्म युधिष्ठिर पार्थ दौण की कीर्ति कौमुदी से उज्ज्वल ॥**

विन्ध्य क्षेत्र में राष्ट्रीय विचारधारा के कवियों में ब्राम्हदेव सिंह, भगवान सिंह गौर, अम्बिका प्रसाद भट्ट, शिवमंगल सिंह सुमन, गंगा प्रसाद पाण्डेय, भैरवदीन, जगदीश चन्द्र जोशी आदि हैं। (बुन्देलवाला) लाला भगवानदीन की पत्नी थी, जिनकी सम्वत 1968 में अल्प आयु में ही मृत्यु हो गई थी। उनकी रचना धर्मिता का उदाहरण-

**सावधान हे युवक उमंगों, सावधानता रखना खून।**

**युवा समय के महामनोहर, विषयों में जाना मत डूब।**

उसी कालक्रम में सरदार याचवेन्द्र सिंह, कसान साहब, शत्रुसूदन सिंह, रामेश्वर प्रसाद रमेश, चन्द्रशेखर शर्मा आदि का नाम भी उल्लेखनीय है चन्द्रशेखर की रचनाओं में माँ भारती की उपासना है। **रहो भारत सत्य सनातनता के उपासक, भारती के बने प्यारे ।  
मुसकान की मंजु मरिचिका, पुंज प्रसार रहे नित पास तुम्हारे ॥**

, स्वाधीनता आन्दोलन में सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले महापुरुषों पर अनेक रचना कारों ने काव्य सृजन किया है। श्री निवास शुक्ल सरस द्वारा लिखा गया रूद्र साह खण्ड काव्य शौर्य और वीरता का अनुपम क्रम है। रूद्रशाह सीधी जनपद में बसे चौहान वंशियों के गौरवमयी की पुरोधा एवं एक अदभुत जीवन यात्रा का नाम है राणाप्रतापपृथ्वीराज, शिवाजी एवं लक्ष्मीबाई की भाँति रूद्रशाह की भाँति, रूद्रशाह का जीवन बूँद से शुरू होकर समुद्र बनने का नाम है।

जय-जय कार मानती, अब भी विध्यभूमि की माही ।  
रूद्रशाह के प्रति गौरवान्वित सीधी की नन्द घाटी॥  
पौरुष का दिनमान अमर हो बने सुसाशित धूल ।  
पल्लवित होवें पौध धरा पर, महके यश के फूल ॥

इसी तरह गोमती प्रसाद विकल प्रबंध रचना रणमत सिंह और रणजीत राय में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की वीरता का तथ्य एवं कथ्य परक वर्णन किया गया है। यह दोनों सपूत विन्ध्य की पावन भूमि में जन्मे तथा देश की आजादी के लिए शहीद हो गए। इनकी शहादत इतिहास में सर्वणाक्षरों में अंकित है। यथा-

जेउन धरती पर हम जन्मेन हाथ जोड़कर हवै प्रनाम  
वीर बघेली माटी अपन नाम गाँव का है परनाम॥  
जब तक एक बेटवा बिटिया के हाथे मा रहे दुनाल्ली।  
कौउनेउ बहरी कैन होई, कबहु इहं बडेरी काली ॥

वस्तुतः साहित्य समाज का दर्पण है यह सूत्र वाक्य पूर्णतः परिलक्षित होता है। विन्ध्य के साहित्य में भी तत्कालीन समाज का चित्रण है समाज एक परिवर्तन शील व्यवस्था है स्वाधीनता आन्दोलन के कारण राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यकारों में देश की गर्हित अवस्था को चित्रण कर देशवासियों के मन में देश प्रेम की भावना जगाने का भरपूर प्रयास किया विन्ध्य के साहित्यकारों ने भी एक और कविताओं के माध्यम से देशवासियों को जगाने का प्रयास किया है। दूसरी ओर अंग्रेजों की कूटिल नितियों की भत्सर्ना की है। राम नरेश सिंह बन्धु की कविता ने वीर सैनिकों को जगाने का कार्य किया है।

फूल करदे केतली, मरणा को जीवन बना दे ।  
तार टूटे वीणा के हो, रागिनी की जय बजा दे ॥  
सजग हो बन्धुत्व योगी, रात्रि गत हुकार दें।  
ओ वीर सैनिक जाग रे॥

साहित्य का मानव जीवन के साथ चिरंतर संबंध है। समाज के किसी भी वर्ग से साहित्यकार का घनिष्ठ संबंध रहता है। यह परिवेश रचनाकार की मनोवृत्ति और उसके द्वारा साहित्यिक चेतना को प्रभावित करता है। प्रत्येक रचना एक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया अपने समय की भावनाओं को साहित्य की विधाओं में प्रकट करती है। स्वाधीनता आन्दोलन का सूत्रपात होने से रचना धर्मिता में पुराने विषय वस्तु के मोह को त्याग कर देशप्रेम अतीत गौरव, समाज सुधार वर्तमान की आलोचना जैसी नवीन विषयों पर लेखनी चलाई है। अन्य राज्यों की भाँति राजनैतिक जागरण का सूत्रपात विन्ध्य प्रदेश के राज्यों में भी आरंभ हुआ विन्ध्य क्षेत्र बघेल खण्ड और रीवा रियासत एक दूसरे के समानार्थी ही है। शिव संहिता में इस भूखण्ड को वरुणान्वल नाम से उल्लेखित किया गया है। विन्ध्याचल के कवियों में भी राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान थी, जिसमें प्रमुख रूप से बुदेलावाला गुजराती देवी, ठाकुर गोपाल शरण सिंह लाल महावलि सिंह, वियोगी हरि आदि विन्ध्य क्षेत्र राष्ट्रीय विचारधारा के कवियों में ब्रम्हदेव सिंह, भगवान सिंह गौर, अम्बिका प्रसाद भट्ट, शिव मंगल सिंह सुमन, गंगा प्रसाद पाण्डेय, भैरवदीन जगदीश चन्द जोशी आदि, साहित्य के माध्य से देश वासियों के मन में देश प्रेम की भावना जगाने का भरपूर प्रयास किया है।

जेउन धरती पर हम जन्मेन, हाथ जोड़कर हवै प्रनाम ।  
वीर बघेली माटी अपने, नाम गाँव का है परनाम ॥  
जब तक एकौ बेटवा बिटिया के हाथे मा रहे दुनाल्ली।  
कौउनेउ बड़री कैन होई, कबहु इहा बडेरी काली ॥

\*\*\*\*\*